विश्व पर्यावरण दिवस, 2017

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून 2017 के अवसर पर स्कूल के बच्चों, युवाओं, शहरी एवं ग्रामीण आबादी, किसान एवं व्यापारी वर्ग तथा गृहणियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के संस्थान के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। यूनाइटेड नेशन्स एन्वायरोनमेन्ट प्रोग्राम द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस 2017 के लिये निर्धारित विषय "लोगों को प्रकृति से जोड़ना" को ध्यान में रखते हुए भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून एवं पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर छायाचित्र एवं स्वरचित स्लोगन प्रतियोगिता हेतु भारत के मध्य क्षेत्र के लिय उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर को नोडल एजेन्सी के रूप में नियुक्त किया गया। दिनांक 20 मई, 2017 को इस प्रतियोगिता के लिये युवा, प्रबुद्ध वर्ग एवं आम नागरिक से बेहतर कल के लिये चार श्रेणियों (1) सीमित उपयोग, पुनर्पयोग, पुनर्चक्रण (2) शहरी हरियाली (3) जल संरक्षण एवं (4)

वन्यजीव संरक्षा में प्रविष्टियाँ आमंत्रित की गई। विद्यार्थियों में पौधरोपण, वायु एवं जल संरक्षण, पोलीथीन एवं प्लास्टिक की रोकथाम आदि के प्रति जागरूकता एवं प्रोत्साहन के लिये दिनांक 02 जून 2017 को दो समूहों कक्षा 1 ली से 5 वीं व कक्षा 6 वीं से 12 वीं तक में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनांक 04 जून 2017 को प्रतिभागियों के सभी वर्गों के लिये प्रातः 6:30 बजे से 8:30 बजे तक "नेचर वाक" का कार्यक्रम रखा गया जिसमें संस्थान के निदेशक, प्रभागाध्यक्षों, वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, शोधार्थियों, उनके परिवारजन एवं जैवविविधता प्रशिक्षण

Source: PRO Cell

केन्द्र ताला, बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व, उमरिया के 48 वनरक्षक प्रशिक्षणार्थियों एवं 02 प्रशिक्षकों ने हिस्सा लिया। उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान की ग्रीन ट्रेल से नेचर वाक के दौरान पारिस्थितिकीय एवं पुनर्वास प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष डॉ. सुमित चक्रवर्ती, वैज्ञानिक 'एफ' ने बताया कि टी.एफ.आर.आई. परिसर में लगभग 165 प्रकार की चिड़िया, विभिन्न प्रकार की बटरफ्लाई एवं ड्रेगनफ्लाई मिलती हैं। यहाँ पर पैरट नहीं मिलता बल्कि तीन प्रकार के पैराकीट- रोजरिंग पैराकीट, अलेक्जेन्ड्राइन पैराकीट तथा प्लमहैडेड पैराकीट तथा चार प्रकार के घुघ सामान्यतः पाये जाते हैं। इसके अलावा एक हिरण, बहुत से सियार, जंगली बिल्ली, नेवला, गुहेरा, विभिन्न प्रकार के सांप एवं अजगर भी हैं। ग्रीन ट्रेल पर जाते वक्त मिले विभिन्न पक्षियों के घोसलों की आपने पहचान कराई। डॉ. सुमित चक्रवर्ती ने मकड़ालय में टाईल्स से बने मकड़ी के जाल के मॉडल से बताया कि किस प्रकार मकड़ी जाल बनाती है और कीड़े पकड़ने के लिये किस प्रकार जाल में चिपकने वाले पदार्थ को छोड़ती जाती है। आपने झाड़ पर मकड़ी द्वारा बनाया एक प्राकृतिक मकड़जाल भी दिखाया। मकड़ालय में 50 प्रकार की मकड़ियों के फोटोग्राफ्स सुसज्जित हैं, जो टी.एफ.आर.आई. केम्पस में मिलती हैं। टैरेन्टोला नाम की विशाल मकड़ी का एक म्यूजियम स्पेसीमेन भी मकड़ालय में रखा है जो विदेशों में 100 से 1000 डालर में बिकता है तथा विदेशी लोग शौक से इसे अपने घरों में पालते हैं। आपने बताया कि मकड़ी के जाल से बुलेटप्रूफ जैकेट बनाये जाते हैं जो वजन में अपेक्षाकृत हल्के और सुरक्षा की दृष्टि से अधिक मजबूत होते हैं। मकड़ालय का अनुभव नेचरवाक में आये सभी के लिये नया व रूचिकर था। लघुवनोपज प्रभाग के अनुसंधान अधिकारी डॉ. के.सी. चौधरी ने टी.एफ.आर.आई. परिसर में वृद्धि कर रहे खमेर, बीजासाल, सफेद सिरस, चंदन, कसई, महानीम, सेमल, विभिन्न प्रकार की बाँस प्रजातियों आदि को दिखाया व उनकी पहचान बताई।

दिनांक 05 जून 2017 को सभी वर्गों के लिये आयोजित "रन फार इन्वायरमेंट" का

प्रातः 9:00 बजे से 10:30 तक आयोजन किया गया। इस दौड़ में संस्थान के निदेशक डॉ. यू. प्रकाशम के नेतृत्व में समूचे संस्थान ने हाथ में पर्यावरण संरक्षण से संबंधित स्लोगन वाले पोस्टर लिये संस्थान से ग्रामपंचायत सालीवाड़ा के गौर तिराहा तक हिस्सा लिया। ग्रामीणों, दुकानदारों, बस, आटो, मोटरसाइकिल, स्कूटर व पैदल आ-जा रहे लोगों को जागरूक करने और उन्हें पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने के लिये गौर तिराहा स्थित कार्यक्रम स्थल पर डॉ. नितिन कुलकर्णी, वैज्ञानिक "जी" एवं प्रभागाध्यक्ष, वन विस्तार प्रभाग ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमें पॉलीथीन एवं प्लास्टिक निर्मित वस्तुओं का उपयोग बंद करने के लिये संकल्प लेना होगा। ये मानव स्वास्थ्य, पालतू पशुधन एवं पर्यावरण सबके लिये हानिकारक है। किसी भी आयोजन के उपरान्त हमें यह निश्चित करना होगा कि कागज के टुकड़े, उपयोग किये गये कागज से निर्मित चाय-नाश्ते के कप-प्लेट आदि आयोजन स्थल व इसके आसपास के क्षेत्र को गंदा तो नहीं कर रहे हैं। जनप्रतिनिधि श्री भगवानदास श्रीपाल ने अपने उद्बोधन में कहा कि धरती को बंजर होने से बचाने के लिये प्रत्येक नागरिक वर्ष में किसी भी शुभ अवसर पर कम से कम 02 पोधे अवश्य लगाये एवं उन्हें खाद-पानी देकर बड़ा करें। जल एवं वायु को शुद्ध रखना हमारा कर्तव्य है। वृक्षरहित धरती एवं प्रदूषणयुक्त पर्यावरण में मानव, पशुपक्षी एवं वन्यजीवों का जीवन सुरक्षित नहीं है। हमारे खेत भी तभी अधिक से अधिक पैदावार देंगे जब धरती वृक्षों से भरी होगी तथा जल एवं वायु प्रदूषणमुक्त होंगे। संस्थान के निदेशक ने बताया कि हम छोटे-छोटे प्रयासों से बड़ी-बड़ी सफलतायें प्राप्त कर सकते हैं। जैसे- पानी की बरबादी रोकने के लिये ग्लास में उतना ही पानी लें जितना हम पी सकते हैं। घर व सार्वजनिक स्थानों को साफसुथरा रखें तथा दूसरों को भी स्वच्छ वातावरण के लिये प्रेरित करें। आपने बताया कि यह स्वच्छता अभियान का ही परिणाम है कि हमारे प्रदेश के इंदौर और भोपाल स्वच्छ शहरों की गिनती में शामिल हैं। सरकार द्वारा बनाई योजनाएँ तभी सफल होंगी जब आमजन उसका सक्रिय भागीदार बनेगा। आपने कहा वनों की सुरक्षा, वनों के आसपास रहने वालों का भी कर्तव्य है कि वे वनों का दोहन इस प्रकार करें कि जंगलों को नुकसान न पहुँचे तथा वन्यजीवों की सुरक्षा को खतरा न हो। आपने बताया कि यह सरकारी प्रयासों का ही फल है कि आज हमारे जंगलों में टाईगर की संख्या बढ़ रही है। पूरे विश्व में 45 साल पहले से ही पर्यावरण संरक्षण के लिये सरकारें प्रयास कर रही है। डॉ. अविनाश जैन, वैज्ञानिक-एफ एवं प्रभागध्यक्ष, लघुवनोपज प्रभाग ने कहा कि पर्यावरण दिवस की

Source: PRO Cell

शुरूआत अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सन् 1973 से ही शुरू हो गई है। मैं जनप्रतिनिधियों से अनुरोध करता हूँ कि वे इस प्रकार की व्यवस्था करें कि व्यापारीवर्ग अपनी दुकानों के आगे कचना ना जलाये, क्योंकि इससे निकली कार्बन डाईआक्साइड वायु को प्रदूषित करती है। आपने कहा सूखे एवं गीले कचरे को अलग-अलग डस्टबीन इकट्ठा कराया जाये तथा ग्रामपंचायत स्तर पर कम्पोस्टिंग मशीन लगाकर एकत्रित कचरे से कम्पोस्ट बनाई जाय। व्यस्ततम गौर चौराहे पर गाड़ियों को आड़ा-तिरछा खड़ा किया जाता है जिससे दिन में कई बार जाम लग जाता है। आपने बताया कि जाम के दौरान एक लीटर डीजल या पेट्रोल के जलने से तीन किलो कार्बन डाईआक्साइड वायु में मिलकर उसे विषाक्त कर देती है। अतः जनप्रतिनिधि एवं पुलिस विभाग गाड़ियों को कतार में खड़ी करने की व्यवस्था करें। आपने बताया कि यह बड़े हर्ष का विषय है कि पर्यावरण के हित में हमारा देश स्वच्छ भारत मिशन अभियान के द्वारा सराहनीय प्रयास कर रहा है। डॉ. सुमित चक्रवर्ती ने अपने धन्यवाद उद्बोधन में कहा कि धन्यवाद प्रस्ताव के पहले मैं यह बताना चाहता हूँ कि सन् 1920 की बात है जब कुछ कार्यकर्ता महात्मा गाँधी के पास आये और कहा कि हम देश के लिये कुछ काम करना चाहते हैं तो राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा कि "ये सफाई से शुरू होता है"। पहले आप अपने क्षेत्र को साफ-सुथरा करो यह देश के लिये तुम्हारा पहला काम है। आपने जनप्रतिनिधियों से अनुरोध किया कि पॉलीथीन उपयोग को रोकने के लिये तथा रोजगार एवं पर्यावरण के हित में कागज के पैकेट के इस्तेमाल को अमल में लाया जाय। टी.एफ.आर.आई. संस्थान की तरफ से पुराने अखबार, ब्राउन पेपर व अन्य उपयोगी कागज से पैकेट बनाना हम सिखायेंगे और ये पैकेट इतना मजबूत होगा कि इसमें एक किलोग्राम सामग्री आसानी से रख सकेंगे। आपने जनप्रतिनिधियों, उपस्थित व्यापारी बंधुओं, ग्रामीणजन तथा संस्थान परिवार को धन्यवाद देते हुए कहा कि "लोगों को प्रकृति से जोड़ने" में एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु जनजागरण के लिये आपने जो सहयोग दिया उसके लिये टी.एफ.आर.आई. संस्थान आप सबका आभारी हैं। समापन समारोह में संस्थान के निदेशक डॉ. यू. प्रकाशम द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण-पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्थान के डॉ. एस.एन.

Source: PRO Cell

मिश्रा, श्री राघवेन्द्र राजपूत, श्री दीपक यादव, श्री हेनरी एन्थोनी, श्री सुनील झारिया, श्री अल्फ्रेड फ्रांसिस का सहयोग सराहनीय रहा।

Source: PRO Cell

Source: PRO Cell

Source: PRO Cell